सर्व पुष्करणा ब्राह्मण के इष्टदेव

श्री केशवराय-मन्दिर-दिग्दर्शन

बेट द्वारका (गुजरात)



सर्व पुष्करणा के ईष्टदेव भगवान श्री केशवराय के मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार

बेट द्वारका (शंखोद्धार)-गुजरात

सर्व पुष्करणा ब्राह्मण के इष्टदेव

श्री केशवराय-मंदिर-दिग्दर्शन

बेट-द्वारका (गुजरात)

लेखक :
श्रीमती अंजना थानवी, एम.ए., एल-एल.बी.
रामदत्त थानवी, एम.ए., साहित्य रत्न

प्रकाशक :
अरविन्द डी. जोशी
श्री केशवराय मन्दिर जीर्णोद्धार समिति
जामनगर (गुजरात)

श्री केशवराय मन्दिर दिग्दर्शन (इतिहास)

पुस्तक प्राप्ति स्थल :
श्रीमती अंजना थानवी
रामदंत्त थानवी
बी-96, कृष्णा नगर,
न्यू पाली रोड, जोधपुर-342 005 (राज.)
मो. 94131-33182

प्रकाशक :
श्री केशवराय मन्दिर जीर्णोद्धार समिति
301, पुष्पम् एपार्टमेन्ट
कृष्णा कॉलोनी गली नं. 3 के सामने,
हीरजी मिस्त्री रोड नं. 2
जामनगर (गुजरात)

प्रथम संस्करण : 1000

प्रकाशन वर्ष : 2011

मूल्य : 30 रुपये मात्र

मुद्रक :
जांगिड़ कम्प्यूटर्स, जोधपुर
फोन : 0291-2700581

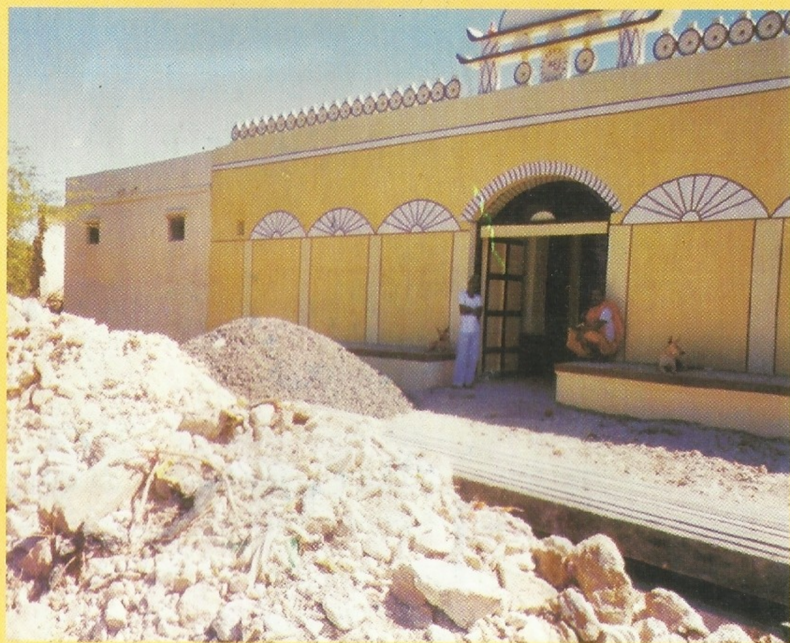
अनुक्रमणिका



भगवान श्री केशवराय जी का चमत्कारिक प्राचीन विग्रह



भगवान श्री केशवराय जी के दर्शन करते हुए भक्त यात्रीगण



भगवान श्री केशवराय जी के मंदिर का मुख गर्भ द्वार



पुजारी श्री धनसुख भाई जानी एवं उनकी धर्मपत्नी रंजना देवी अपनी पुत्री के साथ

जोधपुर के भक्त द्वारा मन्दिर में बनाया गया भग्नावेश कमरे पर लगा शिलालेख का चित्र

मंदिर में मिली 200 साल पुरानी बही में यात्रियों का लिखा वृत्तांत का एक अंश

प्रकाशकीय-आभार

बेट द्वारका स्थित सर्व पुष्करणा समाज के इष्टदेव भगवान श्री केशवरायजी के मन्दिर का प्रामाणिक इतिहास लिखने में जो शोधपूर्वक प्रयास किया गया है उसके लिए अखिल भारतीय पुष्करणा सेवा परिषद शाखा जोधपुर के अध्यक्ष श्री रामदत्त थानवी और आपकी इतिहासवेत्ता पुत्रवधू श्रीमती अन्जना थानवी है। इस इतिहास को पुस्तकाकार देने में, आर्थिक सहयोगी इं. मण्डलदत्त कल्ला एवं डॉ. चन्द्रप्रभा कल्ला तथा सुन्दर एवं आकर्षक छपाई करने वाले जांगिड़ कम्प्यूटर्स के हम अत्यन्त आभारी हैं और आशा करते हैं कि यह लघु इतिहास पाठकों को अतीत के गौरवशाली इतिहास की झलक देने में सफल होगा।

प्रकाशक

भगवान श्री केशवराय मंदिर

जीर्णोद्धार समिति,

जामनगर (गुजरात)

भगवान श्री केशवराय मन्दिर दिग्दर्शन

भगवान श्रीकृष्ण ने द्वारकापुरी बसा कर यहीं अपना राज्य स्थापित किया और सम्पूर्ण महाभारत की लीला द्वारकाधीश के नाते कौरवों और पाण्डवों से रचाकर विश्व के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया था कि जब मानव की बुद्धि में अहंकार का दुष्प्रभाव बढ़ जाता है तो महान् से महान् योद्धा और नरपति स्वयं विनष्ट ही नहीं होता अपितु सर्वकुल का नाश कर डालता है। इस सम्पूर्ण लीला के समाप्त होने के बाद स्वयं नर रूप नारायण एक बहेलिये के बाण से अपने पैर में घाव लगने से अपनी मानव लीला समाप्त कर पुनः स्वधाम गमन कर गये। वही द्वारकापुरी और यह दारुवन वैष्णव भक्तों का पावन तीर्थ बन गया। सम्पूर्ण भारत से वैष्णव भक्त द्वारकापुरी दर्शन करने को आते रहे हैं, परन्तु मारवाड़ रियासत या यों कहिए कि मरु प्रदेश के वासियों का तो यह महान् तीर्थ स्थल बना रहा है।

इतिहास साक्षी है कि श्री रामदेवजी-रामापीर-बाबा रामदेव के पिता राजा अजमालजी पुत्र प्राप्ति की कामना से द्वारकापुरी आये थे और उनकी अटूट भक्ति के फलस्वरूप द्वारकाधीश ने रामापीर के रूप में उनका पुत्र बन कर मरु प्रदेश को भी पावन कर दिया था। कृष्ण भक्त प्रेम वियोगिनी मेड़तणी मीरां जिसकी कृष्णभक्ति और समर्पण साधना के कारण मेवाड़ की राजराणी बन कर भी महलों का परित्याग कर भगवान श्रीकृष्ण जैसे अमर पति को प्राप्त करने हेतु वन-वन भटकती रही और अन्त में श्री द्वारकाधीश के मन्दिर में अपने प्राण-प्रिय प्रभु से साक्षात्कार करके अपनी दिव्यात्मा को परमात्मा में लीन कर गई। उसी द्वारकापुरी की पावन धरा में मारवाड़ के ही श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त श्री

कृपारामजी को आदेश मिला श्री केशवरायजी को अब द्वारकापुरी में ही सागर में स्थित शंखोद्धार (बेट द्वारका) में ले जाकर विराजमान करे और वहीं पूजा-अर्चना करके सर्व पुष्करणा ब्राह्मण समाज के तीर्थाटन के लिये मेरा मन्दिर निर्माण करवाकर अपना भक्ति साधना बेट द्वारका में ही चालू कर दें।

श्री केशवराय भगवान कब बेट द्वारका में आकर विराजमान हुए इसका कोई प्रामाणिक इतिहास अभी तक उपलब्ध नहीं हो पाया है परन्तु लोक-कथनानुसार भगवान श्री केशवराय का भव्य वैष्णव सम्प्रदाय का यह देवालय आज से 300 वर्ष पहिले बनाया गया था। श्री कृपाराम जी जोशी अपने इष्ट देव को रथ में बैठा कर यहां लाये थे और रथ ही समुद्र पर तैरता इस पार से उस पार जा पहुंचा था। इसकी पूजा आराधना शिष्य परम्परा से युग युगों तक चलती रही। ये भगवान श्री केशवराय सर्व पुष्करणा ब्राह्मण समाज के इष्टदेव क्यों और कैसे माने जाने लगे, यह तो सही-सही ज्ञात नहीं परन्तु कच्छ की साहित्यकार एवं भारतीय संस्कृति की शोधकर्ता डॉ. निर्मला आसनानी के शोध प्रबंध 'कच्छ की ब्रजभाषा पाठशाला' के 'वैष्णव धर्म शीर्षस्थ अध्याय में कच्छ में वैष्णव सम्प्रदाय के उद्भव के सम्बन्ध में लिखा है, "....कच्छ में कृष्ण भक्ति की लहर आने का प्रबल कारण रहा है 'द्वारिका यात्रा'। भारत भर के चार धाम की यात्रा करने वाले संघ द्वारिका अवश्य जाते थे। इनके अलावा सिंध, राजस्थान व उत्तर भारत से आने वाले वैष्णव-पंथी कृष्ण भक्त कच्छ होकर ही आते थे। कच्छ के बन्दरगाह से द्वारिका का जल-मार्ग निकट का सुविधाजनक होता था।" इस कथन से यह प्रमाणित होता है कि पुष्करणा ब्राह्मण 'सैंधवारण्य निवासी ब्राह्मण' जो कालान्तर में सिंध से राजस्थान में चले आये वे द्वारकाधीश यात्रा पर निरन्तर आते थे और यह श्री केशवराय भगवान का मन्दिर पुष्करणा जोशी कृपाराम द्वारा बनवाया गया था, अतः वे यहां अपनी सेवा प्रदान करते थे।

यह भगवान श्री केशवराय का मंदिर सर्व पुष्करणों का क्यों कहा जाता है इसके उत्तर में यही बात सर्व विदित है कि सिन्ध निवासी पुष्करणा ब्राह्मण जो गुजरात-सौराष्ट्र-कच्छ में आकर स्थायी तौर से बस गये उनका अधिकतर धर्माचार वल्लभाचार्य के वैष्णव सम्प्रदाय अनुसार रहता आया है। 'पुष्करणोपाख्यानम्' ग्रन्थ के पेज संख्या 54 पर स्पष्ट लिखा गया है, ''सामान्य पणे कच्छ, हालार अने सिंध देशना ब्राह्मणोनो धर्माचार वल्लभाचार्य सम्प्रदायानुसार छे।'' इतना ही नहीं ग्रन्थ के रचयिता पण्डित ज्येष्ठाराम मुकुन्दजी पणिया ने ग्रन्थ में एक ठौर भगवान श्री केशवराय की प्रार्थना करते हुए लिखा है–

''प्राय: पुष्करणाजातै: श्री केशवराय इष्ट देवता:
शंखोद्धारेऽस्ति सुन्दरं मंदिरं यस्य।
निधि: केशवराय देवोऽनुद्यभक्तान् धर्म पथप्रसक्तान्॥
अनीतय: शास्त्रपिद्धरीतम,
श्चलंतिया जातिजनेकर्लर्बलात,
विहायताधर्म सहायताश्रया:
स्यु: सर्वएवास्य तथास्त्वनुग्रह:॥''

अब तक लोक प्रचलित कथन गुजरात में यह था कि श्री विष्णु पंड्या जो वैष्णव धर्म का प्रचार करते हैं उनके पूज्य पिताजी ने तत्कालीन गायकवाड़ सरकार से संघर्ष करके शंखोद्धार स्थित सर्व पुष्करणा ब्राह्मणों के इष्टदेव भगवान श्री केशवराय के मन्दिर को तथा उसकी अचल सम्पत्ति को बचाया था और बम्बई स्थित पुष्करणा समाज के 'पुष्करणा समाज महास्थान, मुंबई' ने भगवान श्री केशवराय मन्दिर की सुरक्षा एवं सेवा-पूजा को विधिवत लोकोपचार से और वैष्णव सम्प्रदायानुसार निरन्तर करने के प्रबन्धार्थ एक 'पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट' का निर्माण करके इस मन्दिर की चल-अचल सम्पत्ति को अपने अधिकार में ले लिया था। तत्कालीन ट्रस्ट मण्डल में सर्वश्री दीपक डूंगरसी, पी.एम. कावड़िया, जमनादास दयालजी बोड़ा, नत्थालाल दयाराम जोशी, डॉ. शेखर के. वैद्य तथा श्रीमती कुसुमबेन एम. पणिया सदस्य थे।

गुजरात में आये इक्कीसवीं सदी के 26 जनवरी 2001 में आये भयंकर भूकम्प से भगवान श्री केशवराय मंदिर के भवन-खण्डों की भारी क्षति हुई तब इस ट्रस्ट ने उपेक्षा करके उसको विनष्ट होने के हेतु भविष्य के हाथ में सौंप दिया। इस मन्दिर की समस्त चल-अचल सम्पत्ति जिसमें सोना-चाँदी के बर्तन-आभूषण-झूले आदि थे, इस ट्रस्ट के सदस्य तत्कालीन पुजारी से अपने कब्जे में लेने से नहीं चूके और पूजा-सेवा के प्रति भी उदासीन बन गये। यह सोना-चांदी के बर्तन-आभूषण आज तक उनके पास हैं परन्तु कोई स्वीकारोक्ति नहीं देता। और तो और प्राचीन मूर्ति के माफिया भगवान श्री केशवराय की संगमूसा की मनोहारी मूर्ति को उठाकर ले जाने का दुस्साहस कर बैठे। यह भी एक अलग वृत्तान्त है परन्तु जो सरकारी दस्तावेज एवं प्रमाण साक्ष्य के रूप में प्राप्य हैं उनसे इस केशवराय भगवान के मन्दिर की ऐतिहासिकता सम्प्रति लोक प्रचलित कथा से बिल्कुल विपरीत है।

किंवदन्ति चाहे कुछ भी हो परन्तु पूर्व गायकवाड़ सरकार या जाम साहब के समय के देवस्थान विभाग में भगवान श्री केशवराय मन्दिर के पंजीयन का दस्तावेज गुजरात राज्य के अभिलेखागार में उपलब्ध है उसके अध्ययन से प्रामाणिकता की हकीकत कुछ ओर ही मिलती है। उसमें बताया गया है कि ''बेट शंखोद्धार स्थान ओखा तालुके में आता है जो तत्कालीन रियासती काल में अमरेली परगने में आता था। इस मन्दिर में स्थापित मूर्ति चमत्कारिक मानी जाती रही है और भगवान श्रीकृष्ण ने 'केशी' नामक दैत्य को मारा था इसलिये इन्हें 'श्री केशवरायजी' के नाम से पहचाना जाता है।'' ये दस्तावेज और जानकारी प्रदान करते हैं कि ''खसरा नं. 43, 45, 104, 118 तथा 356 कुल मिलाकर इस मन्दिर की जमीन 88 बीघा थी। रकबा नं. 43 में एक मीठे पानी का कुआँ था जो भगवान श्री केशरायजी को अर्पण कर दिया गया था। रकबा नं. 45 में भगवान श्री केशवरायजी का शिखबरबंद मंदिर था। रकबा नं. 104 में 'बाणगंगा' थी। इस कुएं से प्राप्त एक शिलालेख जो तत्समय मन्दिर में सुरक्षित था (पर आज नहीं है), उस पर लिखा हुआ

था, ''संवत् 871 नो शीलालेख नी नकल रजु थई छै ने नंबर 43 बोबरू छै। अेम जणावे छै जा लेख मां कुवा करी ने जमीन श्री केशवजी ने कृष्णार्पण आपेली छै, अेम लखेलु छै। ने नं. 43 मां कुवी छै ने ते कुवा पासे थी आ पत्थर काढेलो, अेम कहे छै. आ लेखनी पथ्थर हाल केशवरायजी ना मंदिर मां छै ता. 18.11.1870।'' इस शिलालेख के आधार पर यह माना जा सकता है कि भगवान श्री केशवरायजी का देवालय अनुमानत: 200-300 वर्ष पुराना है।

संवत् 1952 में इस मन्दिर के पुष्करणा ब्राह्मण समाज के अधिकारी जोशी कान्हादासजी ने देवस्थान विभाग में लिखित रूप से अपनी मालकी के सम्बन्ध में लिखा था कि इस प्राचीन मन्दिर पर पुष्करणा गुरु की चार (4) पीठ का अधिकार रहा है। वे हैं–1. श्री कृपारामजी, 2. पुरणदासजी, 3. राधाकृष्णजी तथा 4. काहनदास (कान्हादासजी)। आगे बताया था कि संवत् 1916 में चोरों ने लूटा था जिसमें मन्दिर की चल सम्पत्ति चली गई थी तथा संवत् 1952 में इन्हीं कान्हादासजी ने उक्त मन्दिर का जीर्णोद्धार अपने खर्चे से करवाया था। मन्दिर में किये जा रहे मनोरथों के बारे में श्री कान्हादासजी ने बताया था, ''कारतक सुद 1 ने दिवसे अन्नकोट नो मेलो भराय छै. ते बखते गायना तथा न्यारा न्यारा देसावरां थी आवेला वैष्णवों दरसण माटे आवे छै. ते दिवसे छूटा पैसारा आठ आना ना थाय छै।'' (देखिए परिशिष्ट-1)

इस दस्तावेज से यह भी जानकारी प्राप्त होती है कि भगवान श्री केशवरायजी के मन्दिर की सम्पत्ति पर सरकारी तौर पर किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं और न सरकार से किसी प्रकार की आर्थिक सहायता ही मिलती थी और आज तक भी आर्थिक सहयोग नहीं लिया गया है। उस समय देवालय में कई भवन निर्मित थे, यथा–श्री ठाकुरजी का गर्भगृह, दर्शकदीर्घा, भण्डारगृह, रसोईघर, साल, पुजारी के आवास तथा यात्रियां के ठहरने के कमर आदि-आदि। उस वक्त सेवा-पूजा का खर्च अनुमान

से एक हजार रुपये होता था जो भारत भर से दर्शनार्थ आने वाले यात्री संघों की भेंट व दान राशि से संचित होता था। बताते हैं कि प्राचीन काल में भगवान श्री केशवरायजी की जालोजलाली सम्पूर्ण उत्तर भारत में फैली हुई थी। पूरी जमीन का उस समय मूल्यांकन रु. 5000.000 पांच हजार रुपये आंका गया था। यह जानकारी मन्दिर में मिली पुरानी बही से प्राप्त होती है। यहां तक कि कई यात्री-विश्राम के कमरे यात्री संघों व वैष्णव भक्तों द्वारा बना कर मन्दिर को अर्पण किये गये थे। एक शिलालेख मन्दिर प्रांगण में मिला जिसमें लिखा है कि जोधपुर (राजस्थान) के पुष्करणा जोशी ने एक कमरा बनवा कर मन्दिर को भेंट किया था।

इतना भव्य एवं चमत्कारिक भगवान श्री केशवरायजी का मन्दिर जो पुष्करणा ब्राह्मण गुरु परम्परा से एक पीठ की सम्पत्ति थी, वह किन कारणों से उनसे अलग हुई और पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट ने किस कारण से एवं किन परिस्थितियों से इस मन्दिर की चल-अचल सम्पत्ति पर मालिकाना अधिकार प्राप्त किया, इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है। कारण कि जिन ट्रस्टियों ने इसकी चल- सम्पत्ति को कब्जे में लेकर इसकी सेवा-पूजा को विनष्ट किया, वे कुछ बोलते ही नहीं-मौन धारण किये हैं और समाज का इतना दबाव उन पर नहीं हो पाया कि उनको सत्यता प्रकट करने को बाध्य होना पड़े। इस पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट, बम्बई ने मन्दिर की रखवाली और सेवा-पूजा की जिम्मेदारी ली थी परन्तु इसके सदस्यों ने भगवान केशवरायजी के सोने-चांदी के बर्तन और आभूषण ऐसे छुपाये कि उनका अता-पता ही नहीं चल पाया। मन्दिर की मूर्ति तक उठाकर बेचने वाले माफिया लोगों के खिलाफ इस ट्रस्ट का एक भी सदस्य ने मुंह नहीं खोला और जिसने लाखों की सम्पत्ति पर कुण्डली मार कर मन्दिर की लोकप्रियता को इतना नष्ट किया कि गुजरात का सामान्य वैष्णव भक्त भी नहीं जानता कि बेट शंखोद्धार में सर्व पुष्करणा समाज के इष्टदेव भगवान श्री केशवराय का कोई मन्दिर भी स्थित है।

मन्दिर के जीर्णोद्धार का इतिहास–परिचय

भारत प्रसिद्ध वैष्णव भक्त पुष्करणा समाज का यह पावन तीर्थ भगवान श्री केशवराय का भव्य शिखरबंध मन्दिर द्वारका तीर्थ के समीप ओखा बन्दरगाह से स्टीमर द्वारा बेट शंखोद्धार (बेट द्वारका) पहुंचने पर दर्शनीय होता है। यह मन्दिर भगवान श्रीकृष्ण के महल संकुल से करीब 3 किमी. उत्तर दिशा में भगवान श्री शंखनारायण के प्राचीन मन्दिर के सामने स्थित है। पास में शंखोद्धार सरोवर आया हुआ है तथा महाप्रभुजी की प्रसिद्ध बैठक भी इसके पास स्थित है। इसी के आगे पश्चिम दिशा में भगवान श्री बजरंग बली हनुमानजी एवं तत्पुत्र मकरध्वज का शामिल मन्दिर भी दर्शनीय है। सम्प्रति अब सिक्ख गुरुद्वारा भी बन गया है। इस मन्दिर के पास बेट की गांव की आबादी भी बसी हुई है। यहां लोक बहुत कम जाते हैं। कारण कि वहां के पण्डे लोग भगवान श्रीकृष्ण के मन्दिर को दिखाकर उस तीर्थ यात्रा की इतिश्री कर देते हैं और यात्रियों का नाम बहियां में उतार कर भेंट वसूल कर लेते हैं। इस मन्दिर का कोई पण्डा नहीं है तथा बेट द्वारका में रात्रि विश्रामशाला न होने से सूर्यास्त के समय तक यात्री लोग पुनः स्टीमर से द्वारकापुरी आ जाने को ही लालायित रहते हैं।

पूर्व में बताया गया है कि यह मन्दिर पुष्करणा ब्राह्मण जोशी नख की गुरु परम्परा के प्रबन्धन में था जिसकी पूजा के लिये पुजारी नियुक्त था। जब यह मन्दिर 'पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट मुम्बई' ने अपने अधिकार में लिया तो वर्तमान पुजारी ब्राह्मण श्री धनसुख भाई जानि के पिता अपने अर्थ-व्यय से सेवा-पूजा करते एवं भगवान श्री केशवरायजी के भोग की व्यवस्था करते रहे। यह सेवा-पूजा आज भी चल रही है। परन्तु व्यवस्था में एक बड़ा परिवर्तन आ गया है। पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट के अजिम्मेदारान कार्यों से जब यह मन्दिर भुला दिया गया और भूकम्प के कारण इसका विनाश हुआ तो पुजारीजी बहुत ही दुःखी हुए और भगवान की लीला ही समझ कर सुबह-शाम पूजा करने लगे।

किसी कारणवश जामनगर निवासी पाव-भाजी के मशाले का निर्माता नाम श्री अरविन्द भाई डी. जोशी अपने अध्यात्म गुरु के पास उड़ीसा में गये और आराधना के मार्गदर्शन का निवेदन किया, तब उनके गुरु ने उनको बताया कि आपकी समस्त जाति के इष्टदेव श्री केशवराय भगवान बेट द्वारका में तुम्हारी सेवा की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वहां जाकर उनके देवालय को संभाल कर उसका जीर्णोद्धार करो। श्री अरविन्द भाई ने जामनगर आकर सारी हकीकत अपनी धर्मपत्नी को बताई और उसके सुझाव पर बेट-द्वारका में श्री केशवराय मन्दिर के दर्शन किये और पूरी जानकारी प्राप्त की। पुजारी धनसुख भाई जानि ने अरविन्द भाई को अपने वृद्ध पिता (पूर्व पुजारी) से मिलाया। उसने बताया कि 'पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट मुम्बई' में मन्दिर के सारे बर्तन जेवरात सोने-चांदी के लेकर अपने कब्जे में कर लिये हैं और भूकम्प से क्षतिग्रस्त मन्दिर को संभालने को भी नहीं आते हैं, पत्र भेजने पर भी जवाब नहीं देते। उन्होंने इस मन्दिर की सेवा से ही जीवन पाया और खुशहाली देखी तो इस विपदा की घड़ी में भी भगवान श्री केशवरायजी की पूजा करना अपना धर्म समझ कर जैसी बन पाये वैसी पूजा किया करते हैं। उसने उन कागजों को भी दिखाया जिन पर ट्रस्टीगणों के हस्ताक्षर थे और उसमें सारी अचल सम्पत्ति की सूची थी, जो वे पुजारी से ले गये थे। (देखिए परिशिष्ट 2)

श्री अरविन्द भाई ने उन दस्तावेजों की जीरोक्स प्रतियां करवा कर पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट मुम्बई के ट्रस्टियों से सम्पर्क किया और मन्दिर की सेवा-पूजा व भोग के प्रबन्ध के बारे में जानना चाहा और सोने-चांदी के जेवर-बर्तन किनके पास सुरक्षित हैं, यह जानना चाहा तो किसी भी ट्रस्टी ने सही जानकारी नहीं दी। उल्टा अरविंद भाई को ही कोसने को तैयार हो गये। तब अरविन्द भाई ने जाम खंभालिया के श्री हरिदास पणिया तथा अन्य मित्रों के साथ भगवान श्री केशवरायजी की सेवा-पूजा करने का संकल्प लिया और मन्दिर की सफाई कराई, पुताई

कराई, पूजा का प्रबन्ध अपने हाथों में लिया। दीपावली के पावन पर्व के पश्चात् 'अन्नकूट भोग' का मनोरथ करके पूरे भारत में अपने जान-पहचान वालों के पास गुजराती भाषा में मन्दिर का पूर्व संक्षिप्त इतिहास, भगवान श्री केशवरायजी के फोटो एवं अन्नकूट का प्रसाद के पैकेट कूरियर व ट्रांसपोर्ट से अपने खर्चे पर पहुंचाये जिन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में बसे पुष्करणा परिवारों में निःशुल्क वितरित किया गया और पुनः चेतना पैदा करने का प्रयास किया कि लोग यह जान पाये कि सर्व पुष्करणा के इष्टदेव भगवान श्री केशवरायजी का प्राचीनतम परन्तु भूकम्प से क्षतिग्रस्त भव्य देवालय बेट-द्वारका में आज भी स्थित है परन्तु उसका संरक्षक कोई नहीं है।

कुछ समय पश्चात् गुजरात के वयोवृद्ध गांधीवादी समाजरत्न पुष्करणा समाज के अग्रज श्री दयाराम रामदास केवरिया भुज की अध्यक्षता में सम्पूर्ण भारत के पुष्करणा समाज के प्रतिनिधियों की बैठक आहूत की गई और उसमें भगवान श्री केशवराय मन्दिर के जीर्णोद्धार एवं सुव्यवस्था के लिये एक 'भगवान श्री केशवराय मन्दिर जीर्णोद्धार समिति, जामनगर' की स्थापना की गई। लेकिन आश्चर्य की बात है कि पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट मुम्बई का एक भी ट्रस्टी इसमें शामिल नहीं हुआ। इस समिति ने जब कार्य संभाला तो एक और दुःखद घटना घट गई। कुछ लोग पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट मुम्बई के ट्रस्टी बन कर भगवान श्री केशवरायजी के विग्रह को ही उठाने का उपक्रम करने लगे। पुजारी धनसुख भाई जानि निस्सहाय सा दौड़ता हुआ ग्रामीण लोगों के बीच जाकर मूर्ति ले जाने की बात बताकर रोकन की मदद चाही तो गांव के मुसलमान भाई भी सहायता में आ पहुंचे और पुलिस भी आ पहुंची। उनके प्रबल विरोध के कारण एवं पुलिस की सशक्त कार्यवाही के कारण मूर्ति उठाकर ले जाने आये बनावटी ट्रस्टीगण भाग गये और मूर्ति बच गई जो आज भी इस मन्दिर में विराजमान है। इस आशय की सूचना पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट मुम्बई को भेजी गई परन्तु कानों पर जूं भी नहीं रेंगी। (देखिए परिशिष्ट 3)

जीर्णोद्धार समिति के सचिव एवं प्रबन्धकर्ता श्री अरविन्द भाई अपने अध्यात्म गुरु के आदेश का पालन करके दिन-रात भगवान श्री केशवरायजी के जीर्णोद्धार में तथा प्रतिदिन के सभा-मनोरथ एवं अन्य धार्मिक मनोरथों को सम्पन्न करवाने में लगन से जुटे हुए हैं तो आज पुन: भगवान श्री केशवरायजी मन्दिर की मरम्मत हो गई और कई छोटे-मोटे विकास कार्य भी करवाये गये हैं। मन्दिर में गौशाला में गायें रखी जा चुकी हैं तथा भोग के लिए प्रतिमाह 2800 रुपये गुजरात प्रान्त के विभिन्न तालुकों से भेजा जाना निर्धारित हो गया है जिससे पुजारी धनसुख भाई जानि प्रात: मंगला से शयन तक के दर्शन प्रतिदिन करवाने लग गये हैं। जिन लोगों ने मासिक सहयोग देना तय किया है उनका कहना है कि जो भी लोग भगवान श्री केशवरायजी के मन्दिर की सेवा में समर्पित है उनका अहम् कुछ भी नहीं है। वे तो तेरी ही वस्तु तुझे समर्पित करने की भावना से काम कर रहे हैं तो देखिए श्रावण मास में मुम्बई बोरीवली निवासी श्री महेश मधुसूदन वासु, भाद्रपद मास में मुम्बई आणरिया नाथावाल बाड़ा, आश्विन मास में मुम्बई निवासी भरतकुमार जयशंकर वासु, कार्तिक मास में कादीवली मुंबई निवासी दामोदर भगवानदास केवलिया, मार्गशीर्ष मास में जाम खंभालिया निवासी श्री कान्तिलाल वल्लभदास बोड़ा, पौष मास में जामनगर निवासी श्री महेश भाई पी. वासु, माघ मास में आदिपुर निवासी पुष्करणा समाज, फाल्गुन मास में भुज पुष्करणा समाज की ओर से श्री दिनेश एम. व्यास, चैत्र मास में जामनगर निवासी श्री अरविन्द भाई डी. जोशी, वैशाख में बीकानेर राजस्थान निवासी श्री राधेश्याम नथमलजी व्यास, ज्येष्ठ मास में मुम्बई घाटकोपर निवासी श्री चन्द्रकान्त भाई जयशंकर ने तथा आषाढ़ मास में जाम खंभालिया निवासी श्री हरिदास पणिया ने भोग-पूजा हेतु 2800 रुपये इकट्ठा कर भेजने का संकल्प लिया है।

इस मन्दिर के जीर्णोद्धार से पूर्व श्री अरविन्द भाई जोशी यह जानना चाहते थे कि भगवान श्री केशवराय मन्दिर का मालिकाना हक पूर्व में किसका था, क्योंकि जो प्राचीन बही संवत् 946 की मन्दिर में हाथ

1946

लगी जिसमें करीब सवा सौ साल पुरानी मन्दिर की हकीकत बताती है। उससे ज्ञात होता है कि इस मन्दिर की उत्तरी भारत में बहुत प्रसिद्धि थी, वह इस बुरी हालत में कैसे आ गया और यह पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट मुंबई के अधिकार में कैसे चला गया तो बड़ौदा स्थित गुजरात राज्य के देवस्थान विभाग से जो हालात सामने आये और जो दस्तावेज मिले उनके आधार पर ही मन्दिर के प्राचीन इतिहास का पूर्व में वर्णन किया जा सका है। इनके माध्यम से ही यह प्रमाणित हो सका कि इस मन्दिर के निर्माण में, मरम्मत में तथा सेवा-पूजा में सभी प्रकार का आर्थिक व्यय पुष्करणा ब्राह्मण की गुरु परम्परा द्वारा ही किया जाता था। तत्कालीन गायकवाड़ सरकार का किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं रहा था। (देखिए परिशिष्ट-5)

भगवान श्री केशवराय जीर्णोद्धार समिति की ओर से श्री अरविन्द भाई के लगन से किये जा रहे मरम्मत एवं निर्माण कार्यों में ऐसा बताया जाता है कि भूकम्प से क्षतिग्रस्त मुख्य प्रवेश द्वार की, खुले चौक की, मन्दिर के सभागृह की तथा निज रसोई घर व पुजारी निवास की पुनः मरम्मत करवाई गई। फर्श में संगमरमर के टाइल्स लगवाये गये, दीवारों की पुनः मरम्मत कर डिस्टेम्पर करवाया गया। मन्दिर के सभागृह के बाहर लगी चौबदार की मूर्तियों को सुधारा गया। पीछे की दीवार की चारों ओर से मरम्मत करवाई, जंगली जानवरों के उपद्रव से गायों की रक्षा की गई। नये निर्माण के कार्यों में मन्दिर के पास गौशाला बनाई गई, सत्संग की साल बनवाई, भोजन के लिये भोजनशाला बनवाई तथा सत्संग साल के ऊपर मुन्दरा निवासी पुष्करणा भाई के आर्थिक सहयोग से दो विश्राम गृह (कमरे) शौचालय के साथ बनवाये। जोधपुर के पुष्करणा जोशी ने सत्संग साल निर्माण में योग प्रदान किया। मन्दिर में शौचालय एवं स्नानागार भी बनवाये। बिजली और पानी की स्थायी व्यवस्था करवा दी गई। अब यह मन्दिर भक्त जनों का आकर्षण केन्द्र बन गया है। जीर्णोद्धार समिति की निकट भावी योजना के अन्तर्गत मूल

चौक के पास वाले चौक में जहां मौलश्री-नीम-पीपल का सम्मिलित पेड़ है (जो इस समय तेज बरसात से टूट गया) उसके सामने माँ श्री उष्ट्रवाहिनी देवी का मन्दिर निर्माण करवाना है जिसमें करीब 13 लाख रुपये खर्च होने की संभावना है परन्तु प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री अभयरामजी महाराज सिवाणा धाम की अनुकंपा से संगमरमर के पत्थर पहुंच गये हैं और महाराज श्री की प्रेरणा से ही इस मन्दिर का निर्माण किया जा रहा है। दूसरी विशाल योजना पास के खुले भूखण्ड में बड़ी पोल बनवाकर अन्दर आधुनिक सुविधा वाले कमरों का निर्माण करा कर 'केशवराय विश्रामशाला' का निर्माण करवाने की है जिससे यात्री लोग सप्ताह-पारायण, दीपोत्सव तथा होलिकोत्सव आदि में भाग लेने को आये तो सुविधा से निवास कर सके। इस विश्रामशाला का भव्य प्रवेश द्वार बनवाने की योजना है ताकि सामान से भरा ट्रक भी आसानी से अन्दर के प्रांगण में जा सके। बीच में खुला चौक रहे तथा तीनों ओर शौच-स्नानागार से जुड़े कमरों का निर्माण कराया जाने की योजना है। जीर्णोद्धार समिति में सबसे ज्यादा कर्मठ और सक्रिय व्यक्ति श्री अरविन्द भाई डी. जोशी हैं तथा इनके दाहिने हाथ जाम खंभालिया निवासी श्री हरिदास पणिया हैं, जो लगातार मन्दिर का नवनिर्माण करवाने में लगे हैं। (देखिए परिशिष्ट-4)

जोधपुर-राजस्थान से तथा बीकानेर एवं जैसलमेर से जो भी वैष्णव भक्त यात्रियों के संघ श्री केशवराय मन्दिर का दर्शनकरने गये उनके भी विचार पठनीय हैं। वे कहते हैं, "....भगवान श्री केशवरायजी का भव्य मन्दिर बहुत सुन्दर है। मुख्य प्रवेश द्वार भी पोल के भीतर दानों ओर बैठने के स्थान हैं। अन्दर विशाल खुला चौक है जिसमें संगमरमर के पत्थर की रमणीय फर्श है। चौक में बाईं ओर साल बनी हुई है जिसमें भी संगमरमर की फर्श बनी हुई है। साल की पूर्व और पश्चिम दिशा में कमरे बने हैं जो मन्दिर के पुजारी के अस्थाई तौर पर प्रयोग में आते हैं। जब वह सेवा-पूजा के लिए मन्दिर में रहता है। मन्दिर का सभा-मण्डप

काफी बड़ा है जिसमें प्राचीन वास्तुकला की जीवन्त भावना के दर्शन होते हैं। मन्दिर के ऊपर विशाल गुम्बज है जो सफेद रंग से पुता है तथा उस पर ध्वजा फहराती है। मुख्य मन्दिर बहुत ही प्राचीन है और इसकी प्राचीनता आज तक सुरक्षित होती मुखरित हो रही है। मूल मन्दिर में सफेद धातु की चौखटनुमा आसन पर भगवान श्री केशवराय का स्वरूप करीब साढ़े तीन फुट ऊंचे काले पत्थर का शोभायमान है। भगवान चतुर्भुजधारी हैं। भले ही आभूषणों की सजावट नगण्य ही होती है परन्तु लघु शृंगसर में भी भगवान के स्वरूप की दिव्यता के चमत्कारिक दर्शन होते हैं और ध्यान से रूप-दर्शन करें तो भगवान के कानों में बने कुण्डल में ॐ आकार स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। पूजा की आरती के समय भगवान के नेत्र चमकने लगते हैं मानो भगवान श्री केशवरायजी की आंखें चलायमान हैं। भगवान की सेवा प्रात: मंगला से चालू हो कर उत्थापन-शयन तक सभी समां के आयोजन के साथ की जाती है। लेकिन 'राजभोग' की छवि तो अवर्णनीय ही रहती है। वास्तव में श्री केशवरायजी का स्वरूप चमत्कारी और दर्शनीय ही है।''

इतनी सारी व्यवस्था 'जीर्णोद्धार समिति' ने संभाल कर जिम्मेदारी के साथ की है, परन्तु 'पुष्करणा ब्राह्मण ट्रस्ट' सब सम्पदा ले जाकर मौन और उदासीन हो गये हैं, यह आश्चर्य की बात है। श्री बालकृष्ण थानवी फलोदी निवासी ने चल सम्पत्ति को ट्रस्टीगणों से प्राप्त करने के लिए भूख हड़ताल एवं सत्याग्रह की इच्छा व्यक्त की थी परन्तु वह हठयोगी आज इस संसार में नहीं रहा, पर यह ध्रुव सत्य है कि भगवान श्री केशवरायजी की जालोजलाली फिर से बढ़ेगी और संघ के संघ दर्शनार्थ देश-विदेश से आयेंगे।

श्री केशवरायजी की आरती

ओ३म् जय केशवराया, प्रभु जय केशवराया,
बेट द्वारिका शोभित, बेट द्वारिका शोभित, सब जग पर छाया,
ओ३म् जय केशवराया॥ टेर॥

कृष्ण रूपा प्रभुजी, गाडे पर आये, प्रभु गाडे पर आये,
चयन किया गुर्जर को, चयन किया गुर्जर को, सब के मन भाये। ओ३म्॥
ओ३म् जय केशवराया॥१॥

प्रभुवर के संग रुक्मण भी राजे, प्रभुजी रुक्मण भी राजे,
सात समां नित होवै, सात समां नित होवै, जग मंगल काजे-ओ३म्॥
ओ३म् जय केशवराया॥२॥

बेट द्वारिका राजा चरणों का पायक, प्रभु चरणों का पायक,
मन्दिर भव्य बनाया, मन्दिर भव्य बनाया, सुन्दर सुखदायक-ओ३म्॥
ओ३म् जय केशवराया॥३॥

पूर्ण हुआ मन्दिर, तब यज्ञ हुआ भारी, प्रभु यज्ञ हुआ भारी,
सौंपा पुष्करणों को, सौंपा पुष्करणों को, हर्षित नर-नारी-ओ३म्॥
ओ३म् जय केशवराया॥४॥

भक्ति भाव से उत्सव सारे ही होते, प्रभु सारे ही होते,
भक्त दौड़ते आवै, भक्त दौड़ते आवै, नहीं वक्त खोते-ओ३म्॥
ओ३म जय केशवराया॥५॥

इष्टदेव पुष्टिकर, दुःख भंजन दाता, प्रभु दुःख भंजन दाता,
सबके संकट हर्ता, सबके संकट हर्ता, घट-घट से नाता-ओ३म्॥
ओ३म् जय केशवराया॥६॥

जीवन सफल बनाने, जीवन सफल बनाने, मत खोओ अवसर,
बेट द्वारिका जाकर, बेट द्वारिका जाकर, पूरी करो कसर-ओ३म्॥
ओ३म् जय केशवराया॥७॥

श्री केशवराय की आरती जो कोई गावै, प्रभु जो काई गावै,
पाकर शक्ति-भक्ति, पाकर शक्ति-भक्ति, वैकुण्ठ में जावै-ओ३म्॥
ओ३म् जय केशवराया॥८॥

रचयिता

बालकृष्ण मो. थानवी

स्वतंत्रता सेनानी

पूर्व विधायक, रघुनाथपुरा, फलौदी (राज.)

परिशिष्ट– 1

શ્રીકેશરીયરાયજી

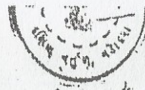


શ્રી.

...સ્થાનો તથા પીરસ્થાનોના વહિવટ કરનારે ભરી મોકલવાનું પત્રક.

પ્રશ્ન.	ઉત્તર.
...નામ અને એ નામની ઉત્પતી	૧ [illegible]
...જગાનું વર્ણન ?	૨ [illegible]
...વહિવટ કોણ કરે છે ?	૩ [illegible]
...કોણે, ક્યારે બાંધ્યું છે ?	૪ [illegible]
...ક્યા ધર્મ તથા સંપ્રદાયનું છે ?	૫ [illegible]
...ની કંઇ ખ્યાતી હોય તો શું છે અથવા ...તો ચમત્કાર હોય તો શું ?	૬ [illegible]

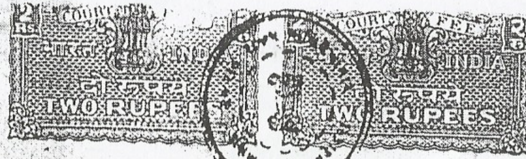
૭ યાત્રા (મેળા) ભરાતી હોય તો કયે દિવસે ભરાઈ કેટલા દિવસ રહે છે. તથા કેટલા લોકો કઈ તરફના આવે છે. અને શું પ્રાપ્તી થાય છે.	૭ [illegible]
૮ સરકારમાંથી દેવસ્થાનને શું ઉત્પન્ન મળે છે? ગામ, જમીન કે રોકડ?	૮ [illegible]
૯ ઉપર મુજબનો સરકાર આશ્રય કોણે ક્યારે કરી આપ્યો? ટીપઃ—જો ખુદ સરકારે જમીન અગર રોકડ આપ્યું ન હોય પણ સરકારના અમલદાર જેવા કે કુમાવીસદાર વિગેરેએ આપ્યું હોય તો એ પ્રમાણે આપનારનું નામ.	૯ નથી
૧૦ સરકાર આશ્રય સંબંધીમાં સરકારથી લેખ, પત્ર થયા છે કે કેમ? હોય તો નકશો સાધા કાગળ ઉપર સામીલ કરવી. ટીપઃ—કંઈ શીલા લેખ હોય તો તેની પણ નકલ સામીલ કરવી.	૧૦ નથી.
૧૧ દેવસ્થાનને લોકો તરફથી શું આશ્રય મળે છે?	૧૧ [illegible]



3

૧૨ દેવસ્થાનને કંઈ લાગા વિગેરે પ્રકારનું ઉત્પન્ન મળે છે કે કેમ ?	૧૨ [illegible] મળતો નથી
૧૩ દેવસ્થાનના મકાનો કેટલા છે. અને કંઈ ભાડું વિગેરે આવે છે કે કેમ ?	૧૩ [illegible]
૧૪ દેવસ્થાનનું કુલ ખર્ચ કેટલું છે. ટીપ:—પુજા, નૈવેદ્ય, ઈતર ખરચ મુસાફિરી, ધર્માદાય સદાવર્ત વિગેરે.	૧૪ [illegible] ૨૦૦૦ [illegible]
૧૫ દેવસ્થાનની મિલકતના કેટલી કિંમત છે ? ૧ સ્થાવર. ૨ જંગમ.	૧૫ [illegible] ૨૦૦૦ [illegible]
૧૬ આ દેવસ્થાન બીજા કોઈ દેવસ્થાનના અંગનું છે કે સ્વતંત્ર છે ?	૧૬ [illegible]
૧૭ આ દેવસ્થાનના અંગના બીજા દેવસ્થાનો છે કે કેમ ?	૧૭ [illegible]

[illegible]











અરજી નંબર : 34

અરજી કરનારનું નામ : અરવિંદ ડી. જોશી

ખરી નકલ મળવાની અરજી તા. 23/12/07

જે આપવા હુકમ થશે તા. 23/12/07

ખરી નકલ તૈયાર થઇ તા. 23/12/07

ખરી નકલ આપવામાં આવી તા. 23/12/07

અસલ સાથે મુકાબલ કરનાર...

હેડ ક્લાર્ક

ખરી નકલ

અધીક્ષક
ગુજરાત રાજ્ય અભિલેખાગાર
દક્ષિણ વર્તુળ, વડોદરા.

એમરેલી

જમીનનો પ્રકાર	માલ જમીનની હકીકત	
	(ખેડુના સરદરમાં) કેશવરાયજી મંદીર	આ કેશવરાયજી મંદીર જેરમાં છે. એ મંદીરના અધિકારી માનદાસજી રાધાકૃષ્ણજી છે તે લખાવે છે કે - આ જમીન ધર્મ છે - મંદીરની વ્યવસ્થા
	ઉ. નંબર [illegible] વીઘાં	સુ. સં. નં. ૪૩ વીઘાં ૨૧-૯-૧૪ છે પૈકી ૦-૮-૦ છે. — માનદાસજી રાખે છે. આ મંદીર [illegible]
	૪૩ [illegible] ૦-૮-૦	[illegible] સરકાર [illegible] નથી - દસ્તાવેજ
	૪૯ કેશવરાયજીના નામે [illegible] ૧-૮-૧૦	[illegible] નથી - પ્રથમ [illegible]
	૧૦૪ [illegible] ૦-૮-૧૯	[illegible] સુ. સં. ૪૯. ૧૦-૧૦ છે તે પૈકી આ છે -
	૨-૦-૯	[illegible] ગુરુ [illegible] છે -
		સંવત ૧૯૭૧ ની [illegible] નકલ [illegible] છે એમ જણાવે છે.
	કૃપારામજી	
	પુરણદાસજી	આ [illegible] કરીને જમીન શ્રી કેશવજીને
	રાધાકૃષ્ણજી	કૃષ્ણાર્પણ આપેલી છે એમ [illegible] છે. ને નં. ૪૩
	માનદાસજી	[illegible] પાસેથી આ પથ્થર કાઢેલો
		એમ કહે છે - આ [illegible] પથ્થર હાલ કેશવજીના
		મંદીરમાં છે - (તા. ૧૮-૨૧-૮૦)

(સહી) [illegible]







અરજી નંબર: 38

અરજી કરનારનું નામ: [illegible] ડી. મહેતા

ખરી નકલ મળવાની અરજી તા. 13/12/07

જે આપવા હુકમ થયો તા. 13/12/07

ખરી નકલ તૈયાર થઈ તા. 13/12/07

ખરી નકલ આપવામાં આવી તા. 13/12/07

અસલ સાથે મુકાબલ કરનાર [illegible]

રેકર્ડ કલાર્ક [illegible]

પસાયતા તારવણી પત્રક મોજે [illegible] તાલુકે [illegible]



અનુક્રમ નંબર.	પળત પત્ર સંવત			નાજી દાખલા સંવત		ઇનામ	
	નંબર	આસામીનું નામ તથા કુવા યા વિઘા	જમીનનો પ્રકાર	આસામીનું નામ તથા કુવા યા વિઘા	જમીનનો પ્રકાર	નંબર	આસામી
૧		શ્રી કેશવરાયજીના મંદીરના વહીવટમાં છે	નરદર	૦			ઈના [illegible]
	૪૩	૦-૫-૦					
	૪૮	૧-૭-૧૦					
	૧૦૪	૦-૭-૧૮		સંવત ૧૮૭૧ ના સાલના			
		૨-૦-૮		તેના મોજણી નકલ ઉપરથી છે			
				તેમાં કુવો કરીને [illegible]			
	૧૧૮	૧-૮		[illegible] કુવો			
	"	૦-૩		નંબર ૪૩ માં છે.			
	૩૨૯	૦-૯		ઈ. ક. નો [illegible]			
		૨-૦		તેમાં વીઘાં ૨૮-૧૮-૨૧			
		[illegible]		[illegible]			
				[illegible]			
				[illegible]			
				[illegible] નં. ૪૮-૧૦૪			
				[illegible]			
				[illegible] નથી.			
				([illegible]) [illegible]			
				રાયજીના મંદીરનું.			
		[illegible]					
		[illegible] G.R.N. 20-10-99		રા. સા. [illegible]			
				[illegible]			
				[illegible]			
				કેશવરાયજી મંદીર [illegible]			
					[illegible]		

परिशिष्ट–2

PUSHKARNA BRAHMIN TRUST

Public Trust Regd. No. A / 1390 (Bom.)

C/o. DOONGURSEE & SONS
Maneckji Wadia Building.
127 Mahatma Gandhi Road.
Fort. BOMBAY-400 023.

ખાર-દાંડાબંદર. ૧૩-[illegible]-૯૫

કોળવાડે આજે સુપ્રત કરેલ માંડોળ વસ્તુઓ પૈકી
મંદિરના નવા શ્રાવણ ઉપયોગ માટે લાવેલ વસ્તુઓ જે અમારી
પાસેથી લઈને ને મારા કબજામાં રાખીશું.

વસ્તુઓ

૧ માંડોળ ધાડી મોરી ૧
૨ માંડોળા વાસોયત ૧
3 માંડોળા કુલવારશ ૧
૪ માંડોળા મુખમોવાળા ૧
~~૫ માંડોળ કોટી~~
૫ માંડળ મરારોળા ૧

૫

લેનાર મુરજાવ
[illegible]

નથાલાલદયારામજોશી
[illegible]

PUSHKARNA BRAHMIN TRUST

Public Trust Regd. No. A / 1390 (Bom.)

C/o. DOONGURSEE & SONS
Maneckji Wadia Building.
127, Mahatma Gandhi Road,
Fort, BOMBAY-400 023.

[illegible] બાજરે બેટ, શંખોદ્ધાર. ૨૮.૧૩.૯.૯૮.

શ્રી પુષ્કરણા બ્રાહ્મણ ટ્રસ્ટ-(મુંબઈ)ના ટ્રસ્ટીઓ પૈકી શ્રી નાથાલાલભાઈ દયારામ જોશી તથા શ્રી જમનાદાસ દયાળજી બોડા [illegible] શ્રી [illegible] [illegible] શ્રી [illegible] [illegible] સાથે શ્રી [illegible] [illegible] મંદિરનું [illegible] [illegible] મંદિરના [illegible] [illegible] મંદિરના [illegible] શ્રી [illegible] [illegible] (બાબુભાઈ) [illegible] વસ્તુઓ પૈકી જે [illegible] વસ્તુઓ હતી [illegible] વસ્તુઓના [illegible] [illegible] શ્રી [illegible] [illegible] વસ્તુઓના [illegible]

વસ્તુઓનું લીસ્ટ

	રોકડા		સાડીઓ	
૧	[illegible] ૧ - [illegible] ૧ - [illegible] ૧	= નંગ ૩.	[illegible]	નંગ ૨
૨	કુંડળ જોડી ૧ (મોટી)	= નંગ ૨	સાડીઓ [illegible] ([illegible])	નંગ ૧
૩	કુંડળ જોડી ૧ (નાની)	= નંગ ૨	[illegible]	નંગ ૪
૪	[illegible]	= નંગ ૨	[illegible]	નંગ ૧
૫	[illegible]	= નંગ ૧	[illegible]	નંગ ૧
૬	[illegible]	= નંગ ૧	[illegible]	નંગ ૧
૭	[illegible]	= નંગ ૧	[illegible]	નંગ ૧
		૧૨	સાડીનું [illegible] ([illegible])	નંગ ૩
	[illegible] ૧૨ [illegible] સાડીઓ [illegible] [illegible]			
૮	[illegible]	= નંગ ૧		
		૧૩		

[illegible]

PUSHKARNA BRAHMIN TRUST

Public Trust Regd. No. A / 1380 (Bom.)

TRUSTEES :

DEEPAk DOONGURSEE
PURUSHOTTAM MAVJI KAVADIA
JAMNADAS DAYALJI BODA
NATHALAL DAYARAM JOSHI
DR. SHARAD K. VAIDYA

C/o. DOONGURSEE & SONS
Maneckji Wadia Building,
127, Mahatma Gandhi Road,
Fort, BOMBAY-400 023.

આબુ

આરસના [illegible] મંદિરને
અર્પણ [illegible]

આંદીના વાટકા [illegible] ૧
આંદીના નાના [illegible] ૧
આંદીના [illegible] ૧
આંદીના [illegible] ૧
આંદીના [illegible] ૧
આંદીના [illegible] ૩
આંદીના વાટકો [illegible] ૧
[illegible]
૭ *
૩
૩

[illegible]
કુલ ૧
કુલ [illegible] ૧
૩.

કુલ [illegible] [illegible]

૧ [illegible]

૨ [illegible]

[illegible] [illegible]
[illegible]

આંદીની વસ્તુઓ.

[illegible] આબુ ૧૬

આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૩
આંદીના વાટકા [illegible] નંગ ૭
આંદીના [illegible] નંગ ૯
નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૩
આંદીના [illegible]
આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૨
[illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૬
આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના વાટકી નંગ ૩
આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૩
આંદીના [illegible] નંગ ૧
આંદીના [illegible] નંગ ૨
૭૨
*
[illegible]
[illegible]

Duplicate

શ્રી પુષ્કર્ણા બ્રાહ્મણ મહાસ્થાન [મુંબઈ]

C/o. નારાયણ વાડી, ૭૯/૮૧, ઓરા બજાર સ્ટ્રીટ, ફોર્ટ, મુંબઈ-૪૦૦૦૦૧.

પહોંચ નં. 333 તારીખ [illegible]

[illegible]

આપના તરફથી સુપ્રસંગ લગ્ન ઉપનયન પ્રસંગે / પાઠ્ય પુસ્તક - [illegible] માટે [illegible]

ભેટ ના રૂા. ૨૦૧ અંકે રૂપીયા [illegible] સેહા / [illegible]

મળ્યાં છે જે આભાર સહીત સ્વીકારવામાં આવે છે, ચેક નં. — તારીખ —

[illegible]

વસુલ કરનારની સહી

भगवान श्री केशवराय की मूर्ति
मन्दिर से ले जाने की कोशिश की लोगों द्वारा
विज्ञापन
समाचार पत्रों में

બેટ શંખોદ્ધારના ટ્રસ્ટી હોવાનો ડોળ કરી પુરાણા મંદિરની મૂર્તિઓ લઇ જવાનો પ્રયાસ

ગામમાં ઉશ્કેરાટ: પોલીસ વચ્ચે પડતા અજાણ્યા કહેવાતા ટ્રસ્ટીઓ "ગૂલ"

ઓખા, તા. ૨૪: (તાર) જાણીતા યાત્રાધામ બેટ શંખોદ્ધારમાં આવેલા વર્ષો પુરાણા કેશવરાયજી મંદિરની મૂર્તિઓ અન્યત્ર સ્થાપિત કરવાની વાતો કરી મંદિરના સાચા ટ્રસ્ટી હોવાનો દાવો કરી આઠ દસ અજાણ્યા શખસોએ મંદિરમાં કેટલીક ચીજો ખસેડવા પ્રયાસ કર્યો હતો. આને પરિણામે ટોળું જમા થતાં ગામમાં ઉશ્કેરાટ ફેલાયો હતો. પોલીસની દરમ્યાનગીરી બાદ કહેવાતા ટ્રસ્ટી એવા આ શખસો મંદિર છોડી ચાલ્યા ગયા હતા. પોલીસે મામલો થાળે પાડયો હતો.

અજાણ્યા શખસો સામે મૂર્તિઓની ચોરીના પ્રયાસની ફરિયાદ પોલીસમાં નોંધાઇ છે.

આજે સવારે પુષ્કરણા બ્રાહ્મણ જ્ઞાતિના ઇષ્ટદેવ કેશવરાજીના મંદિરમાં રહેલી દુર્લબ મૂર્તિઓ મંદિરના ટ્રસ્ટીઓ બીજે ખસેડવા માગે છે એવું કહી આ શખસો મંદિરના પુજારી પાસે આવી ચડયા હતા.

પુજારીને ભોળવ્યા: આ શખસોએ કહ્યું કે "અમે પુષ્કરણા બ્રાહ્મણ ટ્રસ્ટ બોરીવલી સ્ટ્રીટ ફોર્ટ મુંબઇના ટ્રસ્ટી છીએ. મંદિર અમારા ઇષ્ટદેવનું છે. ગામમાં પાણી રસ્તા વીજળીની તકલીફ હોવાથી અમારા ભાઇઓ અહીં આવી શકતા નથી તેથી ઇષ્ટદેવની સેવા થઇ શકતી નથી. આથી અમે મૂર્તિઓને અન્યત્ર લઇ જવા માગીએ છીએ." આમ કહી એ શખસોએ અલગ અલગ લેખોને તોડવાનું ચાલુ કર્યું. પુજારીએ ગ્રામજનોને જાણ કરતાં મંદિર બહાર મોટું ટોળું એકઠું થઇ ગયું.

કેશવરાયજી મંદિરની સુરક્ષા સંગીન બનાવવા માગણી

પોલીસ આવી: દરમ્યાન કંઇ કેસની તપાસ માટે આવેલા ખંભાળિયાના સર્કલ ઇન્સ્પેકટરને જાણ થતાં તેઓ સ્થળ પર પહોંચ્યા. અજાણ્યા શખસો પાસે દસ્તાવેજ કે મંજુરી પત્રો હોય તો બતાવવા કહ્યું. પણ એ શખસો કોઇ આધાર કાગળો બતાવી ન શકતાં કામ અટકાવી દેવાયું. એ શખસો હવે પોલીસ પાર્ટી સાથે આવવાની ધમકી આપી ચાલ્યા ગયા હતા.

રક્ષણ કરો: ગ્રામજનોએ આ પુરાણા મંદિર તથા તેની દુર્લભ મૂર્તિઓની સુરક્ષા માટે પુરતો બંદોબસ્ત ગોઠવવા માગણી કરી છે. પુરાતત્વ ખાતા તથા કલેકટરે યોગ્ય તપાસ કરવી જોઇએ એવી પણ લાગણી પ્રવર્તે છે.

મંદિરની સેવા પગારદાર પુજારી વર્ષોથી કરે છે. ટ્રસ્ટીઓએ કદી ધ્યાન આપ્યું નથી. ત્યાં અચાનક કિંમતી મૂર્તિઓ ઉઠાવી જવાની પેરવી શંકાના વમળો સર્જે છે. મંદિર પુરાતત્વખાતું કે કલેકટર સંભાળે તેવી માગણી થઇ છે.

હંસરાજ લધા અપંગ આશ્રમ દ્વારા હરસ, મસા, ભગંદર રોગનો નિદાન સારવાર કેમ્પ યોજાયો: સો દર્દીઓએ લાભ લીધો

(પ્રતિનિધિ દ્વારા)

જામનગર, તા. ૨૪: જામનગરમાં ત્રણબત્તી ચોક પાસે આવેલી એકત્રીસ પાંચ વર્ષ જુની સંસ્થા "શેઠ હંસરાજ લધા અપંગ આશ્રમના સાર્વજનિક દવાખાનામાં તા. ૨૧ થી ૨૩ એપ્રિલ '૯૫ ત્રણ દિવસ હરસ-મસા- ભગંદર રોગ અંગે કેમ્પ યોજવામાં આવ્યો હતો જેમાં એકસો દરદીઓએ વિનામૂલ્યે સારવાર તથા દવા મેળવી હતી.

સંસ્થાના મેનેજીંગ ટ્રસ્ટી શ્રી જેરા[illegible]ઇ કાપડિયાના અધ્યક્ષસ્થાને યોજા[illegible] આ કેમ્પનું ઉદ્‌ઘાટન ગુજરાત આયુ[illegible] યુનિવર્સિટીના કુલપતિ શ્રી બી. [illegible]

સંસ્થાની અપેક્ષા

સંસ્થાના ટ્રસ્ટી શ્રી અજીતભાઇ પુરેચા તથા વહીવટદાર શ્રી કિસનભાઇ આશરે આ તકે જણાવ્યું હતું કે, 'અપંગ ભાઇ-બહેનો આ સંસ્થાનો બહોળા પ્રમાણમાં લાભ લે તેવું સંસ્થા ઇચ્છે છે. આ ઉપરાંત સ્વનિર્ભર અપંગ વિદ્યાર્થીઓ આ આશ્રમમાં રહીને આવાસ, ભોજન, વિદ્યાભ્યાસની સેવા મેળવે તેમજ આશ્રમ ખાતે ચલાવાતા સાર્વજનિક આયુર્વેદ દવાખાનાનો અને હરસ-મસા- ભગંદર જેવા રોગોની સારવારની જરૂરિયાતવાળા લોકો વધુમાં વધુ લાભ મેળવે તેવો અનુરોધ કર્યો હતો. ડો. કુલવંતસિંઘ આ દવાખાનામાં દરરોજ સાંજે ૬ થી ૮ વાગ્યે

परिशिष्ट–4

भगवान श्री केशवराय के मन्दिर के दर्शन की अपील

पुरुषोत्तम मास में केशवरायजी मंदिर में विशेष मनोरथ दर्शन

वेंट द्वारका (द्वारका तीर्थ) - सर्व पुष्करणा ब्राह्मण समाज के इष्टदेव भगवान श्री केशवराय मन्दिर बेंट शखोद्धार में प्राचीन काल से स्थित है। जिसके दर्शन के लिये भारतभर के वैष्णव संघ यात्रा में आते थे। हाल ही के गुजरात-कच्छ भुकम्प से इस मन्दिर के यात्री-विश्राम स्थल को नुकशान पहुँचा था, परन्तु गुजरात की जीर्णोद्धार समिति ने जन-जन के सहयोग से पुनः जीर्णोद्धार करवाया है तथा दैनिक एवं वार्षिक सेवा पूजा व मनोरथ आयोजन का समुचित प्रबन्ध कर दिया है। वर्तमान व्यवस्था श्री अरविन्द भाई डी. जोशी संभाल रहे हैं। आपने बताया है कि भगवान श्री विष्णु की आराधना वाले इस ज्येष्ठ महीने के पुरुषोत्तम मास में भी केशवरायजी के मन्दिर में कई मनोरथ आयोजित किये जायेंगे। राजस्थान से कोई भी यात्री-संघ भगवान श्री केशवरायजी के दर्शन के लिए बेंट द्वारका आये तो उसके आवास तथा भोजन बनाने की मन्दिर के पास बने नये भवनों में निःशुल्क व्यवस्था है, जहां सभी सुविधा उपलब्ध है तथा गौ-शाला से दूध भी मिल सकता है। अतः वैष्णव भक्त जन बिना किसी संशय के मन्दिर में ठहर कर मनोरथ दर्शन का लाभ ले सकते हैं। यह मन्दिर बेंट द्वारका में श्री महाप्रभूजी की बैठक एवं शखनारायण मन्दिर के निकट स्थित है जो गांव के पास है। बेंट द्वारका में श्री कृष्ण के महलों से पैदल चलकर या टेक्सी से चलकर यहां पहुंचा जा सकता है।

अरविंद डी. जोशी
301, पुष्पम् एपार्टमेंट,
हीरजी मिस्त्री रोड न. 2
जामनगर (गुजरात)
मोबाईल : 092277-07080
फोन : 02886544322

रामदत्त थानवी
अध्यक्ष
अ. भा. पु. सेवा परिषद्, शाखा जोधपुर
'गुलाब', बी-96, कृष्णा नगर
न्यू पाली रोड, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-2722201
मोबाईल : 94131-33182

भगवान श्री केशवराय मंदिर के शिखर का छायाचित्र



आवश्यकताएँ

1. मंदिर के भोग और पूजा के मासिक व्यय रू. 3000/= स्थायी तौर से प्रदान करने वाले 14 दानवीरों की आवश्यकता है।
2. मंदिर के प्रांगण में पुष्करणा समाज की ईष्टदेवी उष्टवाहनी देवी का मंदिर निर्माणाधीन है, इसमें संगमरमर एवं 1 लाख रूपये की धनराशी सिवाणा आश्रम के अधिष्ठाता श्री अभयरामजी महाराज की कृपा से प्राप्त हुए। अब 9 लाख रूपये संग्रह करने में सहयोग की अपील है।
3. मंदिर के पीछे खुले भू-भाग में विश्रामशाला निर्माण कराने की योजना है-दानवीरों की सहायता अपेक्षित है।

सम्पर्क
श्री अरविंद भाई डी. जोशी
301, पुष्पम अपार्टमेन्ट, हिरजी मिस्त्री रोड नं. 2,
जामनगर, गुजरात
मो. 9227707080, फोन 6544322

मुद्रक: वांगिड़ कम्प्यूटर्स, जोधपुर-0291-2700561